२

बहुलवादी सिद्धांत
(Pluralist Theory)

वर्ग प्रभुत्व, विशिष्टवर्गवाद और नारीवाद के सिद्धांत तो यह दावा करते है। कि शक्ति का प्रयोग समाज को दो बड़े - बड़े हिस्सों - शक्तिशाली और शक्तिहीन (Powerful and powerless) हिस्सों में बांट देता है। परंतु शक्ति किसी एक वर्ग या विभाग के हाथों में केंद्रित नही रहती, बल्कि यह अनेक समूहों में बँटी रहती है। इन समूहों को प्रभावशाली और पराधीन समूहों की श्रेणियों में नहीं रखा जा सकता।
चूँकि, समाज - व्यवस्था के अंतर्गत ये समूह कमो बेश परस्पर - आश्रित (interdependent) होते है, इसलिए परस्पर - क्रिया (Interaction) करते समय ये समूह एक - दूसरे को शक्ति को प्रतिसंतुलित कर देते है।

अतः लोकतंत्र का अर्थ है, अपेक्षाकृत स्वायत्त समूहों के बीच सौदेबाजी की प्रक्रिया (A Process of Bargaining among relatively autonomous groups)। इस विचारधारा के अनुसार, उदार समाज के अंतर्गत, मनुष्यों को अपने - अपने हितों की देखरेख के लिए संगठन बनाने की स्वतंत्रता प्राप्त होती है,

लोकतंत्रीय प्रक्रिया के अंतर्गत ये संघ या समूह आपस में सौदेबाजी करके ऐसी नीतियों के लिए अपनी सहमति व्यक्त करते है।

समकालीन राजनीति - सिद्धांत के अंतर्गत रॉबर्ट डाल ने अपनी चर्चित कृति ए प्रिफेस टू डेमोक्रेटिक थ्योरी (लोकतंत्रीय सिद्धान्तों की प्रस्तावना। (1956) के अंतर्गत लोकतंत्रीय प्रक्रिया का ऐसा प्रतिरूप विकसित किया है,